# आलू-मालू-कालू

Pratham

मालू आज पहली बार बग़ीचे से सब्ज़ी तोड़ने गया। मालू ने तोड़े लाल टमाटर, लम्बे बैंगन और हरी-भरी भिण्डी। दादी ने कहा - शाबाश मालू! जाओ थोड़े आलू भी ले आओ। मालू ने सारे पेड़, बेलें और पौधे देखे। आलू कहीं दिखाई नहीं दिए। वह बोला - दादी, आलू अभी उगे नहीं। नहीं

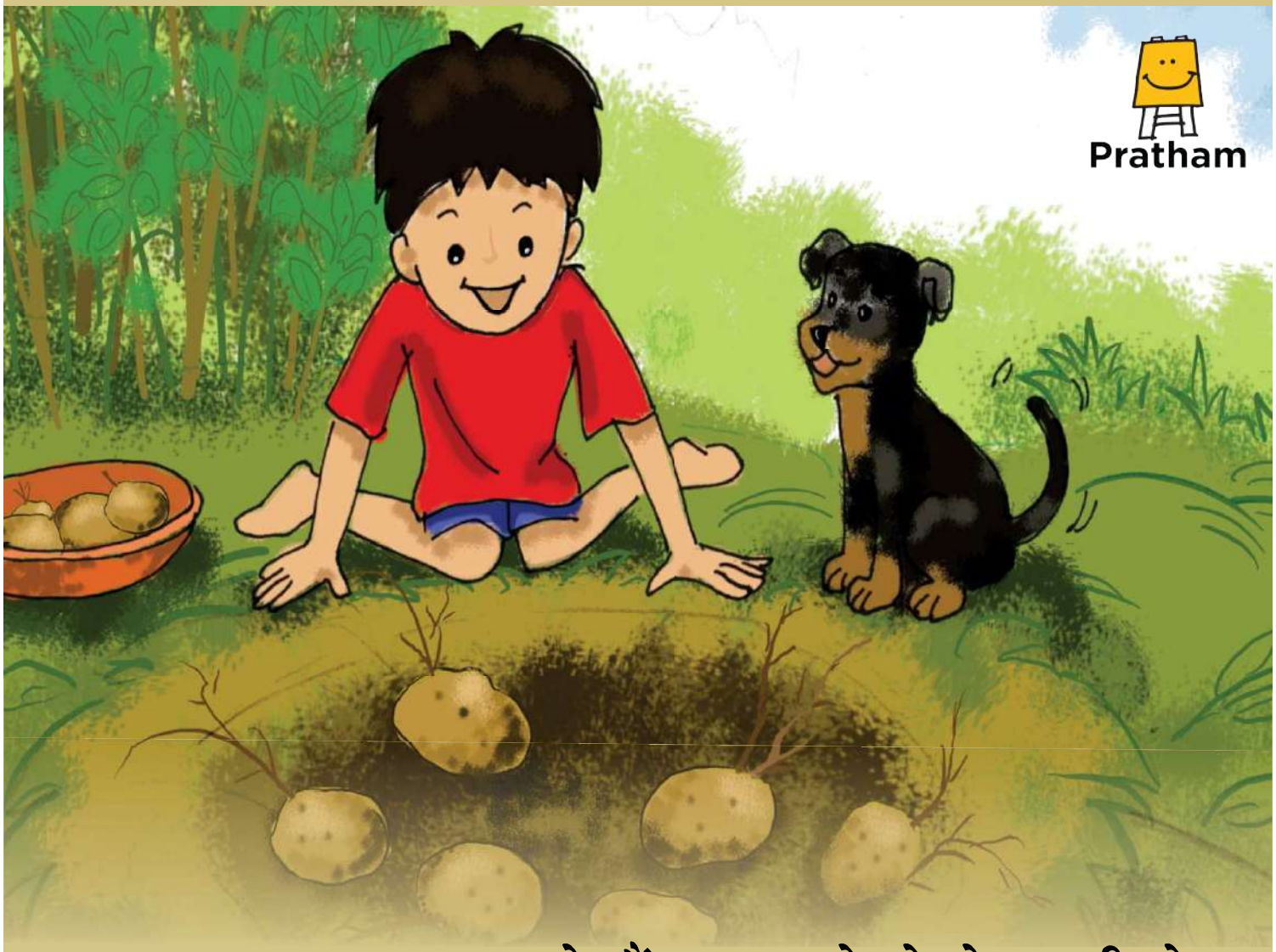

मालू, बहुत आलू उग रहे हैं, ध्यान से देखो। दादी ने समझाया। मालू फिर गया बग़ीचे में। पीछे-पीछे कालू भी चल पड़ा। मालू आलू खोजने लगा। तभी 'भौं, भौं' की आवाज़ सुनाई दी। ओ हो! रुक-रुक कालू, मालू दौड़ा। बग़ीचा ख़राब मत कर। मालू ने देखा, कालू ने गड्ढा खोदा हुआ था। खुदी मिट्टी में थे मोटे-मोटे आलू! वाह कालू! ढूँढ निकाले आलू-टोकरी भर कर बोला मालू।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः विनिता कृष्णा

# अभी नहीं, अभी नहीं!

राहुल ने अज्जी से पूछा – क्या मैं कुछ लड्डू खा लूँ? अभी नहीं बेटा कल खा लेना। राहुल ने मम्मी से पूछा – क्या मैं ये नए कपड़े पहन लूँ? अभी नहीं बेटा, कल पहन लेना। मैं कल तक रुकना नहीं चाहता।

उसने पापा से पूछा – क्या मैं उस सुंदर से डिब्बे को खोल लूँ? नहीं, नहीं। तुम्हें थोड़ा रुकना पड़ेगा! लेकिन

मैं रुकना नहीं चाहता। बड़े हमेशा क्यों कहते हैं, अभी नहीं, अभी नहीं?

उस रात राहुल ग़ुस्से में सो गया। अगले दिन अज्जी ने कहा – तुम ये लड्डू खा सकते हो। मम्मी ने कहा – अब तुम ये कपड़े पहन सकते हो। पापा ने कहा – तुम यह डिब्बा खोल सकते हो! सभी एक साथ बोले – राहुल जन्मदिन बहुत-बहुत मुबारक हो!

चित्रांकनः रूचि शाह

लेखनः रोहिणी नीलकानी